**मनोभिरामाः श्रृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः ।**

**षड्जसंवादिनी केका द्विधाभिन्ना शिखण्डिभिः ।।39।।**

**अन्वय** रथनेमिस्वनोन्मुखैः शिखण्डिभिः द्विधा भिन्नाः षड्जसंवादिनीः मनोभिरामाः केकाः श्रृण्वन्तौ (जग्मतुः)।

**अनुवाद** रथ के पहियों की घरघराहट (को सुनने) से (मेघों के गरजने की भ्रांति से) ऊपर को मुख किए हुए मयूरों द्वारा दो प्रकार से उच्चारण की गई (शुद्ध, विकृत भेद से दो प्रकार के) षड्ज स्वर से मिलने वाली, मन को लुभाने वाली (मयूरों की) ध्वनि को सुनते हुए (वे दोनों जा रहे थे)।

**टिप्पणियां**

**विशेष** प्रस्तुत श्लोक का संगीत शास्त्र से सम्बन्ध है। संगीत शास्त्र में सात प्रमुख स्वर प्रसिद्ध हैं, जिनके नाम हैं- षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। षड्ज इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका उच्चारण छह अंगों से **नासाकण्ठमुरस्तालुजिह्मदन्तांश्च संस्पृशन्। षड्भ्यः संजायते यस्मादस्मात् षड्ज इति स्मृतः।** किया जाता है। षड् (छह अंगों- नाक, कण्ठ, हृदय, तालु, जीभ, दांत) से जन्म लेने के कारण इसे षड्ज कहते हैं। षड्भ्यः जायते इति षड्जः। मोरों की ध्वनि, जिसे 'केका' कहते हैं, 'षड़ज' स्वर से मिलती है। कहा भी गया है. षड्जं वदति मयूर, अर्थात् मोर षड्ज स्वर में बोलता है। राजा और रानी षड्ज जैसी मोरों की ध्वनि सुनते जा रहे थे। यह ध्वनि श्रवण-मग्ल है।

**मनोभिरामाः** मनसः अभिरामाः अथवा अभिरमते मनो यासु ताः मनोभिरामाः (अभि उपसर्ग रम् धातु घञ्) मन को अच्छी लगने वाली, मधुर, 'केकाः' का विशेषण है। मनभावनी मयूर-ध्वनि।

**षड्ज** षड्जेन संवादिनः इतिः षड्ज स्वर से मिलने वाली। 'केकाः' का विशेषण है।

**केकाः** मोरों की ध्वनि या बोली। मयूरवाक् अथवा मयूर स्वर। यह ध्वनि अत्यन्त सुमधुर होती है।

**द्विधा भिन्नाः**.दो प्रकार से, दो तरह से उत्पन्न की गई। शुद्ध विकृत भेद से या च्युत अच्युत भेद से दो प्रकार की। 'केकाः' का विशेषण है। जैसे षड्ज स्वर दो प्रकार का (शुद्ध तथा विकृत एवं च्युत तथा अच्युत) होता है वैसे ही 'केकाः' भी दो प्रकार की थी।

**रथनेमि** उद्गतं सुखं येषां ते उन्मुखा (बहुव्रीहि), रथस्य नेमयः इति रथनेमयः (षष्ठी तत्पुरुष); रथनेमीनां स्वनः, रथमेमिस्वनः (षष्ठी तत्पुरुष), तेन उन्मुखा रथमेमिस्वनोन्मुखाः, ते। 'शिखण्डिभिः' (मोरों द्वारा) का विशेषण है। वे मोर जिन्होंने राजा दिलीप के रथ के पहियों की ध्वनि को मेघों की गड़गड़ाहट समझ कर अपना मुख आकाश की ओर उठा लिया था।

**शिखण्डिभिः** मोर की कलगी को शिखण्ड कहते हैं। शिखण्डः विद्यते अस्यासौ शिखण्डी। मोरों के द्वारा।

**श्रृण्वन्तौ** श्रु धातु शतृ, प्रथमा विभक्ति द्विवचन। वे दोनों सुनते हुए।

**षड्जसंवादिनीः** षड्भ्यः स्थानेभ्यः जातः इति षड्जः। षड्जेन संवादिनीः सदृशीः (समान)।